जन सहभागिता से आर्थिक तरक्की ही नहीं मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ी

❐ ज्योति सूर्यवंशी

यह कहानी छिन्दवाड़ा जिले के अमरवाड़ा विकासखण्ड के ग्राम मरकावाड़ा के उन कृषकों की है जिनके पास कुछ वर्ष पहले कृषि योग्य भूमि तो थी, लेकिन वह सिंचाई के साधन व मृदा कटाव जैसी परेशानी के कारण उससे एक फसल मुश्किल से ले पाते थे और उससे होने वाली आमदनी से परिवार का भरण-पोषण भी नहीं कर पाते थे, जिसके कारण भूमि होने के बावजूद वह कृषक मजदूरी पर निर्भर थे। काम की तलाश में पलायन कर अन्य जिलों में चले जाते थे। जिन कृषकों के पास सिंचाई के साधन थे वह भी भीषण गर्मी के कारण पूरी फसल नहीं ले पाते थे, लेकिन जलग्रहण प्रबंधन के कार्य के चलते पहले मेंढ़ बंधान कार्य से भूमि का कटाव रोका गया, जिससे खेती में धीरे-धीरे बदलाव आया और उन कृषकों का भाग्य तब चमका जब उनके खेत के पास ही जलग्रहण मिशन से केवल दो लाख रुपये से तालाब का निर्माण किया गया क्योंकि वह किसान जो केवल खरीफ फसल के भरोसे होते थे वह अब इसी खेत से प्रतिवर्ष एक लाख रुपये की कीमत की अदरक की फसल भी ले रहे हैं।

ग्राम मरकावाड़ा का कृषक, अदरक की खेती के साथ

बायोगैस संयंत्र

अभियान का आरंभ

जलग्रहण प्रबंधन मिशन में ग्राम मरकावाड़ा को एक माइक्रोवाटर शेड चुनकर ग्राम स्तरीय समिति का गठन किया गया। प्रथम वर्ष में कार्ययोजना के अनुसार खेत की मिट्टी को खेत में रोकने के लिए मेंढ़ बंधान किया गया। मेंढ़ बंधान से खेत में धीरे-धीरे नमी भी रहने लगी।

जनसहयोग से बनाया गया तालाब

कार्ययोजना के दूसरे वर्ष में गाँव के लोगों की सहमति के आधार पर एक तालाब के स्थान का चयन किया गया। गाँव के मजदूर व किसानों के इस सहयोग के साथ ग्राम मरकावाड़ा में दो लाख रुपये की लागत का पहला तालाब बनाया गया। 20 हजार रुपये की राशि विकास खाते के लिए भी इन्हीं किसानों द्वारा एकत्रित की गई।

तालाब निगरानी समिति का गठन किया गया जिसका महत्वपूर्ण कार्य था कि वह तालाब की देखरेख व पानी का वितरण व इससे पानी का उपयोग करने वाले किसानों से सहयोग राशि एकत्रित करेगी।

तालाब निर्माण के पश्चात पहली वर्षा ने इसे लबालब भर दिया जिससे तालाब में पूरे साल पानी रहा, जिससे गाँव का जलस्तर बढ़ गया और गाँव के पेयजल स्रोत जैसे हैण्डपम्प व नलकूपों में पानी निरंतर रहने लगा, गर्मी के प्रारंभिक दिनों में ही सूख जाने वाले स्रोतों में सालभर पानी रहने लगा। तालाब

क्र.	किसान का नाम	कुल खेती	फसल का नाम	तालाब निर्माण पूर्व उत्पादन	तालाब निर्माण के बाद उत्पादन
1.	रमेश उईके	6 एकड़	गेहूँ	25-27 क्विंटल	35-40 क्विंटल
			चना	3-5 क्विंटल	6-7 क्विंटल
			अदरक	-	12 क्विंटल
2.	सकलवती उइके	8 एकड़	गेहूँ	30-32 क्विंटल	50-55 क्विंटल
			चना	10-12 क्विंटल	25-28 क्विंटल
			लहसुन	5-7 क्विंटल	10-12 क्विंटल
			अदरक	5-7 किग्रा	15-18 क्विंटल
3.	लेखराम चंद्रवंशी	3.5 एकड़	गेहूँ	12-14 क्विंटल	25-28 क्विंटल
			चना	4-5 क्विंटल	10-12 क्विंटल
			अदरक	40-50 किग्रा.	1 क्विंटल

ने तो मरकावाड़ा ग्राम के कई किसानों की किस्मत ही बदल दी, वह किसान जो जिस जमीन से अपने परिवार के जीवन-यापन को भी पूरा कर पाने में असहाय महसूस करते थे वह उस जमीन से साल भर में लाख रुपये से अधिक कीमत का केवल अदरक प्राप्त कर रहे हैं।

किसान रेखनलाल चंद्रवंशी, सकलवती उइके, मुहूर्त चंद्रवंशी, मेहताप चंद्रवंशी, लेखराम चंद्रवंशी, सकुन सैयाम व रमेश उईके वे किसान हैं जो परियोजना पूर्व जिस खेती से केवल जितनी फसल लेते थे उससे उनके परिवार का पालन-पोषण कर पाने में भी कठिनाई महसूस करते थे, वह तालाब निर्माण पश्चात इस खेती से लाखों रुपये की केवल अदरक की फसल ले रहे हैं; जबकि उनकी अन्य उत्पादन में भी बड़ा अंतर देखा गया।

ग्राम मरकावाड़ा के किसान परियोजना पूर्व जब गाँव में एक भी तालाब या बाँध नहीं थे तब रबी एवं खरीफ की फसल ही मुश्किल से ले पाते थे, लेकिन जलग्रहण प्रबंधन के कार्य में बने तालाब के बाद यही किसान अब अपने खेत में सर्वाधिक पानी की माँग वाली फसल गन्ने की खेती भी करने लगे हैं।

तालाब के पश्चात अपनी आमदनी में आई बढ़ोत्तरी से किसान आर्थिक रूप से सुदृढ़ हो गए हैं। वह किसान जिन्हें अपनी दो जून की रोटी की तलाश में अन्य जिलों में पलायन करना पड़ता था अब उनके जागरूकता, सामाजिक प्रतिष्ठा व मान-सम्मान में भी बढ़ोतरी आई है, जिनके बच्चे अपने घरों के काम-काज में अपना समय बरबाद करते थे अब वह अच्छी शिक्षा के लिए बाहर भी जाने लगे हैं। किसानों की समृद्धि के चलते गाँव में उनकी प्रतिष्ठा भी बढ़ी है।

ग्राम स्तर पर किसी कार्य को तब तक पूरी सफलता नहीं मिल सकती है जब तक कि उस कार्य के लिए जन सहभागिता नहीं मिले। जलग्रहण प्रबंधन के कार्य का प्रारंभ तो जनसहभागिता के साथ ही शुरू होता है। ग्राम मकरवाड़ा में बनी जलग्रहण समिति के प्रयासों के साथ इस मिशन से ग्रामीण लगातार जुड़ते ही गए और लोगों की सलाह, परामर्श के बाद ही जगह एवं कार्य तय किए गए।

(लेखिका समाज शास्त्र की सहा. प्राध्यापक हैं।)

जलाशय

तीनों छायाचित्र : प्रीतमसिंह ठाकुर